**वर्ष : 2021-22**

**पाठ्यक्रम विवरण : (जनवरी- मई 2022)**

**पाठ्यक्रम : हिंदी (विशेष)**

**सेमेस्टर : 6**

**पेपर : हिंदी आलोचना**

**शिक्षक : डॉ. कवितेन्द्र इंदु**

**पाठ्यक्रम**

**इकाई-1:**

हिन्दी आलोचना का विकास : भारतेन्दु युग से द्विवेदी युग तक

**इकाई-2 :**

छायावादयुगीन आलोचना : पाठ आधारित

आचार्य रामचंद्र - शुक्ल काव्य में लोकमंगल

प्रेमचंद - साहित्य का उद्देश्य

प्रसाद - छायावाद और यथार्थवाद,

हजारी प्रसाद द्विवेदी - आधुनिक साहित्य : नई मान्यताएँ

**इकाई-3 :**

नई कविता के युग की आलोचना : पाठ आधारित

रामविलास शर्मा – तुलसी साहित्य के सामन्त-विरोधी मूल्य

अज्ञेय - दूसरा सप्तक की भूमिका

मुक्तिबोध- नई कविता का आत्मसंघर्ष

विजयदेव नारायण साही - शमशेर की काव्यानुभूति की बनावट

**इकाई-4 :**

नवलेखन के युग की आलोचना (कथा आलोचना) : पाठ आधारित

नामवर सिंह - नई कहानी सफलता और सार्थकता

सुरेन्द्र चौधरी - कहानी की पाठ प्रक्रिया : कथा के स्तरों का प्रश्न

नेमिचंद्र जैन - सन्दर्भ की खोज

निर्मल वर्मा - रेणु : समग्र मानवीय दृष्टि

**पाठ्यक्रम विवरण**

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी आलोचना के इतिहास एवं आलोचना के विभिन्न मानदंडों से परिचित कराना है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र हिंदी आलोचना के विकास के अलावा उसमे मौजूद विभिन्न धाराओं से परिचित होंगे। हिंदी के महत्वपूर्ण आलोचनात्मक पाठों एवं आलोचकों के अध्ययन के जरिये वे हिंदी आलोचना की महत्वपूर्ण बहसों एवं विभिन्न आलोचनात्मक प्रतिमानों की जानकारी प्राप्त करेंगे। इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र रचनात्मक साहित्य की समीक्षा करने में स्वयं सक्षम होंगे।

**शिक्षण समय : 16 सप्ताह (लगभग )**

**कक्षाएं : 5 लेक्चर**

कक्षाएं पेपर के पाठ्यक्रम की रूपरेखा अनुसार सप्ताह के 5 दिन प्रस्तुत समय सारणी द्वारा आयोजित की जाएंगी । प्रतिदिन कक्षा व्याख्यान के आलावा ट्युटोरियल कक्षाओं में विद्यार्थियों के प्रश्नों, शंकाओं का समाधान और निर्धारित विषयों पर विचार विमर्श किया जाएगा। असाइनमेंट, टेस्ट और प्रस्तुतीकरण के आधार पर आंतरिक मूल्यांकन होगा।

**इकाई अनुसार पाठ्यक्रम विवरण :**

|  |  |
| --- | --- |
| **सप्ताह** | **विषय** |
| सप्ताह 1 | आलोचना की अवधारणा एवं स्वरूप |
| सप्ताह 2 | आलोचना की भूमिका |
| सप्ताह 3 | **इकाई-1: हिन्दी आलोचना का विकास : भारतेन्दु युग से द्विवेदी युग तक** |
| सप्ताह 4 | **इकाई-2 : छायावादयुगीन आलोचना : पाठ आधारित**  आचार्य रामचंद्र - शुक्ल काव्य में लोकमंगल |
| सप्ताह 5 | प्रेमचंद - साहित्य का उद्देश्य |
| सप्ताह 6 | प्रसाद - छायावाद और यथार्थवाद, |
| सप्ताह 7 | हजारी प्रसाद द्विवेदी - आधुनिक साहित्य : नई मान्यताएँ (प्रथम असाइनमेंट) |
| सप्ताह 8 | **इकाई-3 : नई कविता के युग की आलोचना : पाठ आधारित**  रामविलास शर्मा – तुलसी साहित्य के सामन्त-विरोधी मूल्य |
| सप्ताह 9 | अज्ञेय - दूसरा सप्तक की भूमिका |
| सप्ताह 10 | मुक्तिबोध- नई कविता का आत्मसंघर्ष |
| सप्ताह 11 | विजयदेव नारायण साही - शमशेर की काव्यानुभूति की बनावट  ( द्वितीय असाइनमेंट) |
| सप्ताह 12 | **इकाई-4 :**  **नवलेखन के युग की आलोचना (कथा आलोचना) : पाठ आधारित**  नामवर सिंह - नई कहानी सफलता और सार्थकता |
| सप्ताह 13 | सुरेन्द्र चौधरी - कहानी की पाठ प्रक्रिया : कथा के स्तरों का प्रश्न |
| सप्ताह 14 | नेमिचंद्र जैन - सन्दर्भ की खोज |
| सप्ताह 15 | निर्मल वर्मा - रेणु : समग्र मानवीय दृष्टि |
| सप्ताह 16 | क्लास टेस्ट, पुनरावृत्ति एवं समूह चर्चा |

सम्बंधित पुस्तकें :

* चिन्तामणि - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
* आस्था के चरण - नगेंद्र
* कविता के नये प्रतिमान - नामवर सिंह
* पाश्चात्य साहित्य-चिंतन - निर्मला जैन
* हिंदी आलोचना के बीज शब्द - बच्चन सिंह
* एक साहित्यिक की डायरी - मुक्तिबोध
* आलोचना से आगे - सुधीश पचौरी
* हिंदी गद्य, विन्यास और विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी
* दूसरी परंपरा की खोज - नामवर सिंह
* हिंदी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी
* आलोचना का नया पाठ - गोपेश्वर सिंह
* संकलित निबंध - नलिन विलोचन शर्मा
* हिंदी आलोचना का विकास - नंदकिशोर नवल
* आस्था और सौन्दर्य - रामविलास शर्मा